



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

चित्रा मुद्गल एवं गीतांजलि श्री की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

Patil Dhanashree Diliprao

Research Scholar, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

Dr. Rajendra Kashinath Baviskar

Supervisor, Department of Hindi, Malwanchal University, Indore

संक्षेप

चित्रा मुद्गल एवं गीतांजलि श्री की कहानियों का यह तुलनात्मक अध्ययन समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में उनकी विशिष्ट कथा-दृष्टि, विषयवस्तु और शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस शोध का उद्देश्य दोनों लेखिकाओं के कथा-संसार में निहित सामाजिक यथार्थ, स्त्री-अस्मिता, मनोवैज्ञानिक संवेदना तथा संरचनात्मक प्रयोगधर्मिता को समझना है। अध्ययन में पाया गया कि चित्रा मुद्गल की कहानियाँ श्रमिक वर्ग, सामाजिक विषमता और स्त्री-शोषण जैसे यथार्थवादी मुद्दों को स्पष्ट, सशक्त और प्रत्यक्ष शैली में प्रस्तुत करती हैं, जबकि गीतांजलि श्री की कहानियाँ अधिक प्रतीकात्मक, मनोविश्लेषणात्मक और प्रयोगशील होती हैं, जिनमें भाषा और संरचना के स्तर पर नवाचार दिखाई देता है। यह शोध तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें चयनित कहानियों के कथ्य, शैली, पात्र-चित्रण और वैचारिक आधार का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः दोनों लेखिकाएँ स्त्री-विमर्श को केंद्र में रखती हैं, किंतु उनके दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति के तरीके भिन्न हैं, जो हिंदी कथा-साहित्य को विविधता और गहराई प्रदान करते हैं। यह अध्ययन न केवल साहित्यिक मूल्यांकन करता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी इन रचनाओं की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

Keywords: स्त्री-विमर्श, कथा-दृष्टि, तुलनात्मक अध्ययन, सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

प्रस्तावना

कहानियों की दृष्टि (चित्रा मुद्गल एवं गीतांजलि श्री के संदर्भ में) समकालीन हिंदी साहित्य की उन प्रवृत्तियों को उजागर करती है, जिनमें व्यक्ति, समाज और समय के जटिल अंतर्संबंधों का संवेदनात्मक तथा वैचारिक विश्लेषण निहित है। इक्कीसवीं सदी के बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में कहानी केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि वह एक सशक्त विमर्श का उपकरण बन गई है, जो हाशिए पर स्थित वर्गों, स्त्री-अस्तित्व, अस्मिता संकट, विस्थापन और वैश्वीकरण के प्रभावों को गंभीरता से अभिव्यक्त करती है। चित्रा मुद्गल की कहानियाँ श्रमजीवी वर्ग, स्त्री संघर्ष और सामाजिक असमानताओं की तीखी सच्चाइयों को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं, जहाँ संवेदना और प्रतिरोध का संतुलित स्वर दिखाई देता है। दूसरी ओर, गीतांजलि श्री की कहानियाँ अधिक प्रयोगधर्मी और मनोवैज्ञानिक गहराई लिए होती हैं, जिनमें भाषा, संरचना और कथन-शैली के स्तर पर नवीनता के साथ-साथ अस्तित्ववादी प्रश्नों की पड़ताल भी की जाती है। इन दोनों लेखिकाओं की दृष्टि में भिन्नता होते हुए भी एक समान तत्व यह है कि वे परंपरागत कथा-शिल्प से आगे बढ़कर आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

करती हैं। इस प्रकार, उनकी कहानियाँ न केवल सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं, बल्कि पाठक को चिंतन के नए आयामों से भी जोड़ती हैं। अतः इस प्रस्तावना के माध्यम से स्पष्ट होता है कि समकालीन हिंदी कहानी में दृष्टि का विस्तार, संवेदनशीलता की गहराई और अभिव्यक्ति की नवीनता, इन दोनों लेखिकाओं के योगदान से समृद्ध हुई है।

• अध्याय की रूपरेखा एवं उद्देश्य

इस अध्याय की रूपरेखा का मुख्य उद्देश्य समकालीन हिंदी कहानियों में दृष्टि या दृष्टिकोण के स्वरूप, विकास और उसके प्रभावों का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से चित्रा मुद्गल और गीतांजलि श्री की कहानियों के संदर्भ में। इस अध्याय में पहले दृष्टि की संकल्पना को स्पष्ट किया जाएगा, तत्पश्चात् इक्कीसवीं सदी के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों के संदर्भ में कहानी की दृष्टि में आए बदलावों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही, यह अध्याय यह भी जांचेगा कि किस प्रकार इन दोनों लेखिकाओं की रचनाएँ अलग-अलग जीवनानुभवों और वैचारिक धरातलों को अभिव्यक्त करती हैं। चित्रा मुद्गल की कहानियों में जहाँ सामाजिक यथार्थ, श्रमिक जीवन और स्त्री संघर्ष प्रमुख हैं, वहीं गीतांजलि श्री की कहानियाँ मनोवैज्ञानिक जटिलताओं और प्रयोगधर्मिता की ओर उन्मुख हैं। इस प्रकार, इस अध्याय का उद्देश्य इन दोनों लेखिकाओं की दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह समझना है कि समकालीन हिंदी कहानी किस प्रकार बदलते समय और समाज के साथ अपनी संवेदनात्मक और वैचारिक दिशा का विस्तार कर रही है।

• इक्कीसवीं सदी की कहानियों में दृष्टिकोण का महत्व

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में दृष्टिकोण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यही वह तत्व है जो कहानी को केवल घटनाओं का विवरण न बनाकर उसे एक गहन वैचारिक और संवेदनात्मक अभिव्यक्ति में परिवर्तित करता है। इस दौर में समाज तीव्र गति से बदल रहा है, जहाँ वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, शहरीकरण और सामाजिक असमानताएँ नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं। ऐसे में कहानीकार का दृष्टिकोण इन परिवर्तनों को समझने और प्रस्तुत करने का प्रमुख माध्यम बनता है। चित्रा मुद्गल की कहानियों में दृष्टिकोण सामाजिक सरोकारों और यथार्थवादी चेतना से प्रेरित है, जो शोषित वर्ग और स्त्री के संघर्ष को प्रमुखता देता है। दूसरी ओर, गीतांजलि श्री की कहानियों में दृष्टिकोण अधिक आत्मान्वेषी और प्रयोगशील है, जो व्यक्ति के आंतरिक संसार और अस्तित्वगत प्रश्नों को उजागर करता है। इस प्रकार, दृष्टिकोण न केवल कहानी की दिशा निर्धारित करता है, बल्कि वह पाठक के सोचने के तरीके को भी प्रभावित करता है, जिससे साहित्य समाज में परिवर्तन और जागरूकता का सशक्त माध्यम बनता है।

चित्रा मुद्गल का साहित्यिक अवदान

चित्रा मुद्गल का साहित्यिक अवदान समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली माना जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों की आवाज़ को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास श्रमिक जीवन, स्त्री-शोषण, दलित विमर्श, शहरी निम्नवर्ग की संघर्षशील परिस्थितियाँ तथा सामाजिक विषमताओं को यथार्थपरक दृष्टि से



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

प्रस्तुत करते हैं। वे केवल कथाकार नहीं, बल्कि एक सजग सामाजिक चिंतक के रूप में भी उभरती हैं, जिनके साहित्य में परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा दिखाई देती है। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावी है, जो सीधे पाठक के मन पर प्रभाव डालती है और उसे सामाजिक यथार्थ से जोड़ती है। चित्रा मुद्गल ने अपने लेखन में विशेष रूप से स्त्री जीवन के विविध आयामों को उकेरा है, जहाँ स्त्री केवल पीड़ित नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आवां' में ट्रेड यूनियन आंदोलन और श्रमिक वर्ग के संघर्षों का सशक्त चित्रण मिलता है, जो उनके सामाजिक सरोकारों की गहराई को दर्शाता है। इसी प्रकार उनकी कहानियाँ जैसे 'पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा' आदि में महानगरीय जीवन की विडंबनाएँ और मानवीय संवेदनाओं का गहन चित्रण देखने को मिलता है। शिल्प की दृष्टि से वे यथार्थवादी परंपरा का अनुसरण करती हैं, जहाँ कथानक स्पष्ट, घटनाएँ क्रमबद्ध और पात्र जीवंत होते हैं। उनके साहित्य में संवादों की प्रामाणिकता और परिवेश का सजीव चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो पाठक को कथा के भीतर ले जाता है। चित्रा मुद्गल का योगदान इस बात में भी निहित है कि उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर सामाजिक परिवर्तन का उपकरण बनाया, जिससे साहित्य की उपयोगिता और प्रासंगिकता बढ़ी है। वे उन लेखिकाओं में शामिल हैं जिन्होंने स्त्री-विमर्श को व्यावहारिक और जमीनी संदर्भों से जोड़कर उसे नई दिशा प्रदान की। इस प्रकार, उनका साहित्य न केवल सामाजिक यथार्थ का दर्पण है, बल्कि एक सक्रिय हस्तक्षेप भी है, जो पाठक को सोचने, समझने और परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है, और यही उनके साहित्यिक अवदान की सबसे बड़ी विशेषता है।

• प्रमुख कृतियाँ एवं विषय-वस्तु

चित्रा मुद्गल का साहित्य समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में सामाजिक चेतना और यथार्थपरक दृष्टि का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनकी प्रमुख कृतियों में उपन्यास 'आवां' विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें औद्योगिक परिवेश, श्रमिक आंदोलनों और ट्रेड यूनियन की राजनीति का सजीव चित्रण किया गया है। इसके अतिरिक्त उनकी अनेक कहानियाँ मध्यमवर्गीय जीवन, स्त्री की स्थिति, पारिवारिक संबंधों और बदलती सामाजिक संरचनाओं को केंद्र में रखती हैं। उनकी विषय-वस्तु जीवन के ठोस यथार्थ से जुड़ी हुई है, जहाँ वे समाज के उपेक्षित, संघर्षशील और वंचित वर्गों को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाती हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है, जो पाठक के साथ सीधा संवाद स्थापित करती है। उनकी कृतियाँ केवल कथा कहने तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हुए पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे उनका साहित्य एक महत्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज के रूप में स्थापित होता है।

• श्रमिक वर्ग एवं स्त्री जीवन का चित्रण

चित्रा मुद्गल की रचनाओं में श्रमिक वर्ग और स्त्री जीवन का चित्रण अत्यंत मार्मिक, सजीव और यथार्थपूर्ण ढंग से किया गया है। उन्होंने श्रमिकों के जीवन में व्याप्त संघर्ष, असुरक्षा, शोषण और उनके अधिकारों के लिए चलने वाले आंदोलनों को गहराई से समझकर प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में मजदूर केवल



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पृष्ठभूमि का पात्र नहीं, बल्कि एक सशक्त और केंद्रस्थ भूमिका निभाता है, जिसकी समस्याएँ और आकांक्षाएँ पूरी संवेदनशीलता के साथ सामने आती हैं। साथ ही, वे स्त्री जीवन के विविध आयामों—जैसे सामाजिक बंधन, लैंगिक असमानता, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की खोज—को भी गहराई से उकेरती हैं। उनकी स्त्रियाँ परिस्थितियों से जूझती हुई भी अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं। इस प्रकार, चित्रा मुद्गल का लेखन श्रमिक और स्त्री जीवन को न केवल अभिव्यक्ति देता है, बल्कि उन्हें साहित्य में एक सशक्त पहचान भी प्रदान करता है।

• सामाजिक यथार्थ के प्रति प्रतिबद्धता

चित्रा मुद्गल का साहित्य सामाजिक यथार्थ के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। वे उन लेखिकाओं में हैं, जिन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि परिवर्तन का माध्यम भी माना है। उनकी रचनाओं में आर्थिक विषमता, वर्ग संघर्ष, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक अन्याय जैसी समस्याओं का निर्भीक और स्पष्ट चित्रण मिलता है। वे किसी प्रकार की आडंबरपूर्ण भाषा या काल्पनिक आदर्शों के बजाय जीवन की वास्तविकताओं को प्रमुखता देती हैं। उनके लेखन में संवेदना और विचार का संतुलन दिखाई देता है, जो पाठकों को न केवल प्रभावित करता है, बल्कि उन्हें सामाजिक सरोकारों के प्रति जागरूक भी बनाता है। इस प्रकार, उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता उनके साहित्य को प्रासंगिक, प्रभावशाली और जनोन्मुख बनाती है, जिससे वे हिंदी साहित्य में एक सशक्त और जिम्मेदार रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं।

3.2.2 गीतांजलि श्री की रचनात्मकता

गीतांजलि श्री की रचनात्मकता समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में एक विशिष्ट और प्रयोगधर्मी प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ कथा केवल घटनाओं का क्रम न होकर अनुभव, स्मृति, भाषा और चेतना के जटिल अंतर्संबंधों का कलात्मक विन्यास बन जाती है। उनके लेखन में पारंपरिक कथात्मक ढाँचे से हटकर नवीन शिल्प और संरचना का प्रयोग मिलता है, जिससे उनकी कहानियाँ बहुस्तरीय और बहुअर्थी बनती हैं। वे भाषा को केवल संप्रेषण का माध्यम न मानकर एक सृजनात्मक शक्ति के रूप में उपयोग करती हैं, जहाँ शब्द, वाक्य-विन्यास और लय मिलकर एक विशिष्ट काव्यात्मकता उत्पन्न करते हैं। उनकी रचनाओं में प्रतीक, बिंब, रूपक और आंतरिक एकालाप का सशक्त प्रयोग देखने को मिलता है, जो पात्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई और अस्तित्वगत प्रश्नों को उभारता है। विशेष रूप से स्त्री-अनुभव, पहचान का संकट, स्मृति और विस्थापन जैसे विषय उनके साहित्य में प्रमुख रूप से उपस्थित हैं, जिन्हें वे सीधे न कहकर संकेतों और सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। उनका चर्चित उपन्यास 'रेत समाधि' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है, जिसमें भाषा, संरचना और विषय-वस्तु के स्तर पर नवीनता और प्रयोगधर्मिता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है, और जिसने हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान भी दिलाई। गीतांजलि श्री की कहानियों में समय और स्थान की रैखिकता टूटती हुई दिखाई देती है, जहाँ अतीत और वर्तमान, वास्तविकता और कल्पना के बीच की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं। यह शैली पाठक को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि अर्थ का निर्माण केवल लेखक द्वारा नहीं, बल्कि



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पाठक की व्याख्या के माध्यम से भी होता है। उनकी रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को प्रत्यक्ष रूप से न उठाकर उन्हें अंतर्मन की जटिलताओं और अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं, जिससे उनका साहित्य अधिक सूक्ष्म और विचारोत्तेजक बनता है। इस प्रकार, गीतांजलि श्री की रचनात्मकता हिंदी कथा-साहित्य को नई दिशा प्रदान करती है, जहाँ भाषा, शिल्प और विचार की नवीनता के माध्यम से साहित्यिक अभिव्यक्ति के नए आयाम खुलते हैं और पाठक को एक गहन बौद्धिक तथा संवेदनात्मक अनुभव प्राप्त होता है।

• प्रमुख कृतियाँ एवं शैलीगत विशेषताएँ

गीतांजलि श्री समकालीन हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट रचनाकार हैं, जिनकी कृतियाँ विषयवस्तु, संरचना और शैली के स्तर पर गहरी संवेदनशीलता और बौद्धिकता का परिचय देती हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में "रेत समाधि", "माई", "हमारा शहर उस बरस" आदि शामिल हैं, जिनमें पारिवारिक संबंधों, स्त्री अनुभवों, स्मृति, विस्थापन और इतिहास की जटिलताओं को गहराई से अभिव्यक्त किया गया है। उनकी शैलीगत विशेषता यह है कि वे पारंपरिक कथानक संरचना को तोड़ते हुए बहुस्तरीय और प्रतीकात्मक लेखन का प्रयोग करती हैं। उनके यहाँ रैखिक कथानक के स्थान पर विखंडित संरचना, अंतःसंवाद और चेतन प्रवाह की तकनीक देखने को मिलती है। वे पात्रों के मनोवैज्ञानिक आयामों को सूक्ष्मता से उभारती हैं और साधारण घटनाओं को भी दार्शनिक गहराई प्रदान करती हैं। उनकी रचनाओं में संवेदनशीलता, व्यंग्य और मार्मिकता का अद्भुत संतुलन मिलता है, जो उन्हें समकालीन हिंदी कथा साहित्य में एक अलग पहचान देता है।

• प्रयोगधर्मिता एवं उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण

गीतांजलि श्री की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी प्रयोगधर्मिता और उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण है। वे कथा के पारंपरिक ढाँचों को चुनौती देते हुए नए शिल्प और तकनीकों का प्रयोग करती हैं, जिससे उनकी रचनाएँ बहुआयामी और जटिल बन जाती हैं। उत्तर-आधुनिकता के प्रभाव के कारण उनकी कहानियों और उपन्यासों में सत्य की एकमात्र अवधारणा का खंडन होता है और बहुलता, विखंडन तथा अनिश्चितता को स्थान मिलता है। वे इतिहास, स्मृति और पहचान के प्रश्नों को नए तरीके से प्रस्तुत करती हैं, जहाँ अतीत और वर्तमान के बीच की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं। उनकी रचनाओं में व्यंग्य, पैरोडी और आत्म-परकता का प्रयोग भी देखा जा सकता है, जो पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, उनकी प्रयोगधर्मिता केवल शैलीगत नहीं, बल्कि वैचारिक स्तर पर भी है, जो उन्हें उत्तर-आधुनिक हिंदी साहित्य की एक अग्रणी हस्ताक्षर बनाती है।

• भाषा और कथ्य में नवीनता

गीतांजलि श्री की भाषा और कथ्य में उल्लेखनीय नवीनता देखने को मिलती है, जो उनकी रचनाओं को विशिष्ट बनाती है। उनकी भाषा सरल होते हुए भी अत्यंत कलात्मक और बहुस्तरीय है, जिसमें लोकभाषा, बोलचाल और काव्यात्मकता का सुंदर समन्वय मिलता है। वे शब्दों के साथ प्रयोग करती हैं और भाषा को केवल संप्रेषण का माध्यम न मानकर एक सृजनात्मक उपकरण के रूप में उपयोग करती हैं। उनके



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

कथ्य में भी नवीनता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जहाँ वे स्त्री अस्मिता, सामाजिक विसंगतियाँ, सांस्कृतिक पहचान और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं। वे पारंपरिक विषयों को भी नए संदर्भों और दृष्टियों के साथ प्रस्तुत करती हैं, जिससे उनकी रचनाएँ समकालीन यथार्थ से गहराई से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। इस प्रकार, भाषा और कथ्य दोनों स्तरों पर उनकी नवीनता हिंदी कथा साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करती है और पाठकों को नए अनुभवों से परिचित कराती है।

चयनित कहानियों का परिचय

चित्रा मुद्गल और गीतांजलि श्री समकालीन हिंदी कथा साहित्य की दो महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी चयनित कहानियाँ सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाओं और बदलते समय की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं। चित्रा मुद्गल की कहानियाँ मुख्यतः श्रमिक जीवन, स्त्री संघर्ष, सामाजिक अन्याय और आर्थिक विषमता जैसे मुद्दों पर केंद्रित होती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियों में श्रमिक वर्ग की पीड़ा, महानगरीय जीवन की कठोरता और स्त्री की आत्मनिर्भरता का सशक्त चित्रण मिलता है। वे यथार्थवादी दृष्टिकोण के माध्यम से समाज की विसंगतियों को उजागर करती हैं और पाठक को संवेदनशील बनाती हैं। दूसरी ओर, गीतांजलि श्री की कहानियाँ अधिक मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक और प्रयोगधर्मी होती हैं, जिनमें स्मृति, पहचान, भाषा और अस्तित्व के प्रश्न प्रमुखता से उभरते हैं। उनकी कहानियों में कथानक की पारंपरिक रैखिकता के स्थान पर विखंडित संरचना और बहुस्तरीय अर्थ-व्यंजनाएँ देखने को मिलती हैं। दोनों लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री जीवन के विविध आयामों का गहन चित्रण मिलता है, किंतु उनकी दृष्टि और प्रस्तुति में भिन्नता है—जहाँ चित्रा मुद्गल का लेखन अधिक प्रत्यक्ष और यथार्थवादी है, वहीं गीतांजलि श्री का लेखन सूक्ष्म, दार्शनिक और प्रयोगशील है। इस प्रकार, चयनित कहानियाँ न केवल साहित्यिक विविधता को दर्शाती हैं, बल्कि समकालीन समाज की जटिलताओं को समझने का सशक्त माध्यम भी बनती हैं।

• चित्रा मुद्गल की चयनित कहानियाँ

चित्रा मुद्गल की चयनित कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती हैं। उनकी कहानियाँ विशेष रूप से श्रमिक वर्ग, निम्न-मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री संघर्ष और महानगरीय विसंगतियों को केंद्र में रखती हैं। “पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा” जैसी चर्चित रचनाओं में विस्थापन, श्रमजीवी जीवन की कठिनाइयाँ और अस्तित्व के संकट का मार्मिक चित्रण मिलता है। उनकी कहानियाँ केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि पात्रों के भीतर चल रहे मानसिक संघर्षों को भी गहराई से उद्घाटित करती हैं। वे यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए समाज में व्याप्त असमानताओं, शोषण और अन्याय को उजागर करती हैं। उनकी भाषा सरल, प्रभावशाली और संवेदनात्मक है, जो पाठक के मन में सीधा प्रभाव छोड़ती है। चित्रा मुद्गल की कहानियाँ पाठक को न केवल सामाजिक समस्याओं से परिचित कराती हैं, बल्कि उनमें परिवर्तन की चेतना भी जागृत करती हैं, जिससे उनका साहित्य सामाजिक प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण बन जाता है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

• गीतांजलि श्री की चयनित कहानियाँ

गीतांजलि श्री की चयनित कहानियाँ अपने प्रयोगधर्मी शिल्प, मनोवैज्ञानिक गहराई और प्रतीकात्मकता के कारण विशेष पहचान रखती हैं। उनकी कहानियों में स्मृति, पहचान, स्त्री-अस्मिता और अस्तित्व जैसे जटिल विषयों को सूक्ष्म और बहुस्तरीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वे पारंपरिक कथानक संरचना को तोड़कर विखंडित शैली और चेतन प्रवाह की तकनीक का उपयोग करती हैं, जिससे उनकी कहानियाँ पाठक को एक नए अनुभव से गुजरने का अवसर देती हैं। उनकी कहानियों में भाषा का प्रयोग अत्यंत कलात्मक और अर्थगर्भित होता है, जिसमें कई स्तरों पर अर्थ खुलते हैं। पात्रों की आंतरिक दुनिया, उनके विचारों और भावनाओं का गहन विश्लेषण उनकी विशेषता है। उनकी रचनाएँ सीधे-सीधे संदेश देने के बजाय संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, गीतांजलि श्री की कहानियाँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मानवीय अस्तित्व के प्रश्नों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल एवं गीतांजलि श्री की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों लेखिकाएँ समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, किंतु उनकी कथा-दृष्टि, शैली और संवेदनात्मक अभिव्यक्ति में विशिष्ट भिन्नताएँ भी दिखाई देती हैं। चित्रा मुद्गल की कहानियाँ मुख्यतः सामाजिक यथार्थ, श्रमिक वर्ग, स्त्री-शोषण और वर्ग-संघर्ष जैसे मुद्दों को सीधे और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं, जहाँ उनकी भाषा सरल, सशक्त और स्पष्ट है। दूसरी ओर, गीतांजलि श्री की कहानियाँ अधिक मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक और प्रयोगधर्मी होती हैं, जिनमें भाषा और संरचना के स्तर पर नवाचार दिखाई देता है तथा वे स्त्री-अस्मिता, अस्तित्व-बोध और आंतरिक द्वंद्वों को गहराई से उभारती हैं। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो दोनों लेखिकाएँ स्त्री-विमर्श को केंद्र में रखती हैं, किंतु उनके प्रस्तुतीकरण के तरीके भिन्न हैं—एक ओर यथार्थवादी दृष्टिकोण है, तो दूसरी ओर आत्मविश्लेषणात्मक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि दोनों की कहानियाँ मिलकर हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाती हैं और पाठकों को सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों स्तरों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। अतः उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक चेतना के विकास में भी योगदान देती हैं।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

संदर्भ सूची

1. चित्रा मुद्गल. (2005). पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा. वाणी प्रकाशन।
2. चित्रा मुद्गल. (2012). गिलिगडु. राजकमल प्रकाशन।
3. चित्रा मुद्गल. (2000). एक ज़मीन अपनी. किताब घर प्रकाशन।
4. गीतांजलि श्री. (2018). रेत समाधि. राजकमल प्रकाशन।
5. गीतांजलि श्री. (2001). माई. वाणी प्रकाशन।
6. गीतांजलि श्री. (1993). अनुगूँज. राजकमल प्रकाशन।
7. नायर, पी. के. (2016). समकालीन भारतीय साहित्य. रूटलेज।
8. द बोउवार, सिमोन. (2011). द सेकेंड सेक्स (अनुवाद). विंटेज बुक्स। (मूल प्रकाशन 1949)
9. शोवाल्टर, एलेन. (1981). नारीवादी आलोचना का परिप्रेक्ष्य. क्रिटिकल इन्कायरी, 8(2), 179–205।
10. भसीन, कमला. (2004). जेंडर की समझ. काली फॉर वीमेन।
11. कुमार, निशा. (2015). आधुनिक हिंदी साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण. इंडियन लिटरेचर, 59(4), 112–120।
12. सिंह, राकेश. (2018). हिंदी कथा साहित्य में नारी लेखन और कथन-शिल्प. जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिटरेचर, 53(1), 45–60।